ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 181-184

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

# स्त्री शोषण में भेद नहीं होता

## (महाश्वेता देवी के लेखन के सन्दर्भ में)

**1.विजय प्रधान 2. श्यामली पाण्डेय**

1. एसोसिएट प्रोफेसर– शोध निर्देशक, 2. शोध अभ्येत्री–हिन्दी विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राजस्थान)

**Received- 16.06.2020, Revised- 21.06.2020, Accepted - 27.06.2020 E-mail: drshyamli93@gmail.com**

***सारांश :*** *भारतीय समाज मे सिर्फ निम्न वर्ग की ही नहीं बल्कि उच्च वर्ग की स्त्रियाँ भी बराबर शोषित होती आई है। पहले घर–परिवार में फिर समाज में फिर समाज को चलाने वालों के द्वारा स्त्रियों का शोषण होता आया। दोनों वर्गों की स्त्रियों की स्थिति एवं उनके साथ होते दुर्व्यवहारों पर महाश्वेता देवी जी ने अपनी कलम चलाई है। उन्होंने अपने साहित्य में जितना स्थान निम्न एवं दलित वर्ग की स्त्रियों की समस्याओं को दिया है। उतना ही उच्च एवं कुलीन वर्ग की स्त्रियों की समस्याओं को भी दिया है। वो एक तरफ इस झूठे समाज और इस समाज की झूठी मान–मर्यादाओं में फैली नारी के अस्तित्व की चर्चा करती है तो वही दूसरी तरफ वो दाने–दाने को मोहताज होती दलित वर्ग की औरतों के प्रति सहानुभूति दिखाती है।*

***कुंजीभूत शब्द– परिवार, समाज, स्त्रियों, शोषण, दुर्व्यवहारों, साहित्य, दलित वर्ग, समस्याओं, कुलीन वर्ग ।***

उन्होंने अपने उपन्यास शृंखलित, जमुना के तीर, 1084वें की माँ, मर्डरर की माँ, उम्र कैद (वह नहीं लौटी) एवं कहानियों में धौली, डायन एवं रूदाली में उन्होंने स्त्रियों को केन्द्र में रखकर सम्पूर्ण कथा का ताना–बाना बुना है। इन सभी उपन्यासों एवं कहानियों में उन्होंने स्त्रियों के शोषण के विविध कारणों का वर्णन किया है। जहाँ 'शृंखलित' उपन्यास में बूबू हर दिन घरेलू हिंसा की शिकार होती है वहीं '1084वें की माँ' की सुजाता भी अपने पति द्वारा हर दिन यौन शोषण का शिकार होती दिखती है। एक ओर जहाँ 'जमुना के तीर' में ऊँचे कुल एवं नीचे कुल का भेदभाव है तो वही दूसरी तरफ 'उम्रकैद' 'मर्डरर की माँ, एवं धौली कहानी में लड़कियों के खरीद फ़रोख्त एवं वेश्यावृत्ति की समस्या का वर्णन है। 'रूदाली' की सनीचरी हर दिन भूखे मरने को विवश है तो वही 'डायन' कहानी की चण्डी अपने ही समाज के लोगों के द्वारा डायन करार दी जाती है और गाँव से निकाल भी दी जाती है। ये सारी वो समस्याएँ है जिन्हें औरतें आये दिन झेलती आयी है और आज भी झेल रही हैं।

हमारे देश में कभी रही होगी अपाला, गार्गी जैसी विदूषियाँ लेकिन आज की सीता को हर पल अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है और उसके बावजूद भी उनकी समाज में कोई खास स्थिति नहीं है। भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है और सदियों से औरतें पहले पिता, फिर पति और फिर बेटे के ऊपर निर्भर रहती आयी है। उनका इस समाज में अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। पितृसत्तात्मक समाज पर बी.एस. सिंह का मत है, ''इस व्यवस्था में पुरूष का अधिकार स्त्री, बच्चों व परिवार के अन्य सदस्यों पर होता है। नारी पर उसका वर्चस्व कठोर रूप में रहता है। वह उसकी अनुमति के बगैर कुछ नहीं कर सकती है। स्त्री–पुरूष के अधीन रहकर परिवार का कार्य करती है। ..... समाज में यह आम धारणा बन गई है कि पुरूष, स्त्री से अनेक मामलों में श्रेष्ठ है। अस्तु स्त्री को पुरूष के अधीन रहना चाहिए। पुरूषों की यही सोच उनपर इतनी हावी हैं कि वो स्त्रियों को अपने सामने कुछ नहीं समझते। शायद यही सोच के कारण वो अपनी पत्नियों पर हाथ उठाने में भी संकोच नहीं करते। आये दिन चाहे उच्च वर्ग की स्त्रियाँ हो या निम्न वर्ग की घरेलू हिंसा का शिकार होती रहती है। शृंखलित उपन्यास की बूबू आये दिन अपने ससुराल में अपमानित होती है और ससुराल वालों के अत्याचारों को सहती रहती है। ससुराल वालों का अत्याचार इतना बढ़ जाता है कि एक दिन बूबू की जान लेकर ही दम लेता है। बूबू के ससुराल वाले शिक्षित एवं सभ्रांत वर्ग की श्रेणी में आते हैं और वही शिक्षित लोग बूबू के साथ अमानुष जैसा व्यवहार करते हैं। इन शिक्षित एवं सभ्रांत घरानों के अमानुषिय व्यवहार पर देवी जी का कथन है, ''पहले हम सतीदाह किया करते थे और अब शिक्षा–प्राप्त सभ्रांत घरों में हम बहुओं को जला डालते हैं, हाँलाकि कितने–कितने राममोहन–विद्यासागर वगैरह की कीर्ति ..... कितने मनस्वी ..... कितने रकम के आन्दोलन हुए, लेकिन किसी तरह भी मन में कोई परिवर्तन नहीं आया।

परिवर्तन तो कुछ खास नहीं हुआ लेकिन उसमें बढ़ोत्तरी अवश्य हुई। पहले जो काम छुप–छुप कर किये जाते थे, वे अब सरेआम होने लगे है। दहेज, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, लूटखसोट एवं घरेलू हिंसा जैसी चीज़ें अब आम

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

हो गई है। बूबू की तरह ही उम्रकैद की अन्ना (अनुराधा) एक ऐसे पिशाच पशुपति से ब्याह दी जाती है जो उसका शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार से शोषण करता है। अनुराधा आये दिन घरेलू हिंसा की शिकार होती है लेकिन कभी कुछ नहीं बोलती। औरतें कभी भी अपने ऊपर होते घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाती। इसी कारण से उनके पति उन पर हाथ उठाने में जरा भी संकोच नहीं करते। यहाँ गलती औरतों की भी है जो वा चुपचाप से सारे अत्याचारों को सहती जाती है। अपने हक के लिए आवाज़ न उठाने वाली स्त्रियों के विषय में रमणिका गुप्ता लिखती है, ''भारत की आधिकांश बल्कि कहा जाये बहुसंख्यक स्त्रियाँ ऐसी है।जो मुक्ति का अर्थ ही नहीं समझती। स्त्री विमर्श की बात तो दूर, इनमें अभी तक मुक्ति की चेतना या इच्छा ही नहीं जागी है। वे पति को स्वामी और खुद को दासी एवं परिवार को एक अनिवार्यता मानती है। वे अपनी अस्मिता से अनजान अपने सुहाग–भाग की सुरक्षा के लिए अपमान की घूँट पीकर भी संतुष्ट है। ..... दुर्भाग्यवश भारत की मध्यवर्गीय आबादी के सबसे बड़े हिस्से में ऐसी ही महिलाओं की संख्या अधिक है जो स्वयं एक वस्तु अथवा संपति का हिस्सा बनकर पुरूष आश्रित रहकर खुश है।

इनका ऐसे चुप रहना पुरूषों को और बढ़ावा देता है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ घर की चारदीवारी में रहने वाली औरतें ही चुप रहती है बल्कि समाज में निकलकर काम ध ाम करने वाली औरतें भी सब चुपचाप सहती है। 1084वें की माँ की सुजाता ये जानती है कि उसका पति शारीरिक एवं मानसिक शोषण कर रहा है लेकिन वो फिर भी नहीं बोलती। अपने लिए कभी आवाज़ नहीं उठाती। ''दिव्यनाथ कभी साथ नहीं जाते, सुजाता को अस्पताल नहीं ले जाते, बच्चे का रोना सुनना पड़ेगा। इससे तिमंजिले पर ही सोते रहते। बच्चे बीमार पड़े तो खबर तक नहीं लेते, लेकिन हाँ दिव्यनाथ की नज़रे सुजाता पर जरूर लगी रहती, ध्यान से सुजाता को देखते कि सुजाता का शरीर फिर से माँ बनने योग्य हो रहा है या नहीं।''

जहाँ स्त्रियाँ घर की इज्जत एवं सम्मान की पात्र होती थी वहाँ आज वो सिर्फ उपभोग की वस्तु बन गई है। अब बात करें निम्नवर्गीय की तो हम ऐसा कह सकते है कि उच्चवर्गीय स्त्रियों की अपेक्षा निम्नवर्गीय स्त्रियों का शोषण अधिक होता है। वे पहले अनेक प्रकार की सामाजिक बंधनों द्वारा शोषित होती है फिर उच्चवर्गीय लोगों द्वारा फिर अपने ही घर में अपने, पति एवं परिवार द्वारा उनका शोषण किया जाता है।

दलित स्त्रियों की पराधीनता एवं उनके तीहरे शोषण पर मैनेजर पाण्डेय का कहना है, ''दलित स्त्री की समस्या को दो दृष्टियों से देखना जरूरी है। पहली बात ये कि दलित के रूप में स्त्री को शोषण पुरूष से अधिक होता है। दलित स्त्रियों का जो दैहिक शोषण होता है। वह ऐसा है, जो पुरूष दलित का नहीं होता और साथ ही श्रम की वि.त प्रक्रिया में जैसे दूसरों का शोषण होता है, वैसे ही दलित स्त्री का शोषण होता है, क्योंकि दलित समुदाय की स्त्रियाँ दलित पुरूषों की तरह श्रम जीवी होती है। मेहनत मजदूरी करके अपने और अपने परिवार का भरण–पोषण करती है। इसलिए स्त्री के रूप में दलित स्त्री का शोषण और मजदूर के रूप में दलित स्त्री का शोषण, यह दोहरा शोषण है। तिहरे शोषण का शिकार भी दलित स्त्री होती है। दूसरे वर्णों और वर्गों के पुरूष की तरह दलित भी अपने घर–परिवार में स्त्री के साथ लगभग वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा दूसरे वर्णों की जातियों के लोग अपनी स्त्रियों के साथ करते हैं।''

धौली, सोमरी, रूदाली, एवं अनुराधा ये सब दलित वर्ग से सम्बन्ध रखने वाली स्त्री पात्र है जोकि तिहरे शोषण का शिकार है। धौली कहानी की धौली अपने पति के द्वारा रोज अपमानित होती है और जब पति मर जाता है तो एक ब्राह्मण लड़के एवं उसके परिवार द्वारा अपमानित की जाती है। धौली से मिश्रीलाल प्यार करता है और जब वो गर्भवती होती है तो उसे अपनाने के बजाय उसे अकेले छोड़कर चला जाता है। और अन्त में धौली खुद के एवं अपने बच्चे का पेट पालने के लिए वेश्या बन जाती है। इसी तरह रूदाली कहानी की सनीचरी है जोकि अपने पति, सास, जेठ–जेठानी के मरने पर आँसू तक नहीं बहा सकी क्योंकि उसे फुर्सत ही नहीं मिली। ''तीन बरस बीतते–बीतते जेठ–जेठानी सब साफ हो गये। रामावतारसिंह उस समय गाँव से दुसाधो, गंजुओ को भगाने से लगा हुआ था। रामवतार भगा देगा, इसी डर से सनीचरी का समय काँटा बनकर रही। जेठ और जेठानी के मरने पर भी रोना न हुआ। ..... पति के मरने पर न रोयेगी, यह तो सनीचरी ने सोचा नहीं था।''

रोने का अधिकार तो मनुष्य का खुद का है लेकिन ज़मींदारों के शोषण के कारण स्त्री वर्ग वो अधिकार भी उन्हीं को सौंप दीं। जो औरत जीवन भर रो नहीं पाई वो अंत में खुद के पेट पालने के लिए ज़मींदारों के मरने पर छाती पीट–पीटकर रोने के लिए मज़बूर है।

'डायन' कहानी की सोमरी भी उच्च कुल खानदान के लड़कों द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। उसका बलात्कार करके लड़के उसे गाँव से गायब करवा देते है और पूरे गाँव में डायन है – डायन है की खबर उड़ा देते है ताकि गाँव वालों का ध्यान सोमरी को खोजने पर न

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

जाकर डायन से मुक्त होने पर लगा रहे।

निम्नवर्गीय समाज में वेश्यावृत्ति की समस्या एक बड़ी समस्या है जिसके कारण भी औरतों का बहुत ज्यादा शोषण होता है। औरतों की खरीद–फरोख़्त एवं वेश्यावृत्ति पर देवी जी का कहना है कि, ''इन लोगों के समाज में औरत महज गोश्त का टुकड़ा होती है। इसलिए उनकी खरीद–फरोख़्त होती है और यह बात बहुतेरे लोग जाते है। आजकल तो पहली दुनियाँ ही तीसरी दुनिया में कच्ची उम्र के लड़के–लड़कियों के जरिये यौन–कर्म उद्योग को प्रमोट कर रहे हैं। पहले कुछ–कुछ दबा ढका था, लेकिन अब वह सब फूँक में उड़ाकर, यौन–कर्म को वृहद् उद्योग में परिणत करने का इंतजाम भी लगभग पक्का हो चका है।

वेश्यावृत्ति हमारे समाज का एक घिनौना सच है वेश्या बनने के कारण औरतों को हर दिन अपमान और शारीरिक कष्टों को झेलना पड़ता है। कोई भी औरत स्वेच्छा से इस पेशे में नहीं आना चाहती क्योंकि कोई भी औरत हर दिन अपना अपमान अपने हाथों से कभी नहीं करवायेगी। औरतों के वेश्या बनने के पीछे बहुत से कारण होते हैं। डॉ. मंजुलता वेश्यावृत्ति का एक महत्वपूर्ण कारण औरतों को समाज के द्वारा त्याग दिये जाने को मानती है, ''ऐसी महिलाएँ है जनका सामाजिक दृष्टि से परित्याग किया गया है। जैसे – विधवाएँ, निराश्रय और परित्यक्त महिलाएँ, धोखे और ठगी की शिकार जिन्हें विवाह का वचन दिया गया था अथवा विवाह किया गया था और जिस व्यक्ति पर विश्वास किया गया था, उसने दलाल या वेश्यालय के मालिक को बेच दिया। सामाजिक परित्यक्तों में भी कई ऐसी महिलाएँ होती है जिन्हें उनके परिवार, माता–पिता, पति द्वारा बलात्कार का शिकार होने के बाद छोड़ दिया जाता है और ऐसी मजबूरी की स्थितियों में महिलाओं को वेश्यालय की शरण लेनी पड़ती है। जबकि इनमें उनका कोई दोष नहीं।''

'मर्डरर की माँ' उपन्यास में भी राधा नामक गाँव की एक लड़की को शादी के बहाने बहना फुसलाकर शहर लाया जाता है और उसे वैश्यालय में बेचने की कोशिश की जाती है। वो लड़की तपन से मदद माँगती है। तपन उसकी मदद करते हुए अपनी जान गवाँ देता है। 'उम्रकैद' उपन्यास की अनुराधा उर्फ़ अन्ना को भी जब पता चलता है कि उसका पति उसकी चारों बेटियों को बाज़ार में ले जाकर बेच दिया है तो वो उसको जान से मारने की कोशिश करती है। पहली बार में तो पशुपति बच जाता है लेकिन दूसरी बार अन्ना उसकी जान लेकर ही दम लेती है और हमेशा के लिए जेल चली जाती है –

''फिर वही अन्ना नस्कर, फिर थाना। इस बार उसने कबूल किया, ''पिछली बार उस मानस ने दो बेटियों को बेच दिया था। सागर मेला में। इस बार भी जुड़वाँ बेटियों को जाने कहाँ बेच दिया। पिछली बार, सिर पर वार करने से चूक गयी थी। इस बार गर्दन पर वार किया।''

दलित एवं आदिवासी स्त्रियों के शोषण का एक और प्रमुख कारण है उनके ही लोगों द्वारा उनको 'डायन' घोषित कर देना। पहले से उनपर कम अत्याचार हो रहे हैं जो अपने ही समुदाय के लोग उन्हें डायन बनाकर प्रताड़ित करने पर तुले रहते है। आदिवासी कहानी में संकलित कहानी 'डायन' में चण्डी नामक स्त्री को बिना उसके किसी दोष के ही उसे डायन बनाकर गाँव से निकाल दिया जाता है। वो गाँव वालों के सामने विनती करती रहती है लेकिन बिरादरी वाले उसकी एक नहीं सुनते है। डायन–डायन कहकर हर साल बहुत सी दलित एवं आदिवासी स्त्रियों को मौत के मुँह में धकेल दिया जाता है। सरकार द्वारा इसे रोकने के लिए बहुत से प्रयास हुए है। वर्ष 1999 में विधानसभा में इस प्रथा के विरूद्ध आवाज़ उठाई गई और डायन प्रतिरोध विधेयक 1999 लागू किया गया। इस विधेयक में कहा गया है –

''किसी को डायन करार देने पर तीन माह की सजा हो सकती है। डायन कहने पर 1000 रुपये का जुर्माना भी हो सकता है अथवा दोनों दण्ड दिये जा सकते है। डायन कहकर मानसिक या शारीरिक दण्ड देने पर दोषी व्यक्ति को डेढ़ माह की सज़ा या 2000 रुपये जुर्माना देना होगा। या दोनों दण्ड भी एक साथ दिये जा सकते हैं।''

सरकार द्वारा किये गये प्रयासों के द्वारा डायन कहकर औरतों को परेशान किया जाना कम हुआ है और उनकी मृत्यु दर में भी कमी आई है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाश्वेता देवी जी दोनों वर्गों की स्त्रियों की समस्याओं को पाठक वर्ग के सामने रखती है और दिखाती है कि दोनों वर्गों की स्त्रियाँ कहीं न कहीं समान रूप से इस पुरूष प्रधान समाज में शोषित हो रही है। हाँ ये कह सकते है कि निम्न वर्ग की स्त्रियाँ उच्च वर्ग की स्त्रियों की तुलना में कई मामलों में ज्यादा शोषित होती है लेकिन शोषित तो दोनों वर्ग की स्त्रियाँ हो रही है। कहीं घरेलू हिंसा की शिकार होकर तो कहीं बलात्कार का या फिर वेश्या बनाकर आये दिन उनका अपमान किया जा रहा है और वो सब कुछ चुपचाप सहती जा रही है और अगर उन्होंने अपने हक़ में आवाज़ उठाने की कोशिश करती है तो कहीं उन्हें तेज़ाब फेंककर कुरुप बनाने की धमकी दी जाती है या जान से मार देनक की कोशिश की जाती है। उनकी गनीमत इसी में है कि वो सब

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कुछ चुपचाप सहे लेकिन बोले कुछ भी नहीं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बी. एन. सिंह, नारीवाद, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ.सं.–258.
2. महाश्वेता देवी, श्रृंखलित उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.–43.
3. रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, पृ.सं.–33.
4. महाश्वेता देवी, 1084वें की माँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.–12.
5. संजीव चंदन, दलित स्त्रीवाद (मैनेजर पाण्डेय से अरुण कु. की बातचीत), द मार्जिन लाइज्ड पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ.सं.–355.
6. महाश्वेता देवी, रुदाली (घहराती घटाएँ), राधा.ष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.–202.
7. महाश्वेता देवी, उम्रकैद उपन्यास की भूमिका से, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.–7.
8. श्रीमती मंजुलता, अनुसूचित जाति में महिला उत्पीड़न, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ.सं.–9.
9. महाश्वेता देवी, उम्रकैद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.–149.
10. डॉ. डी. वी. नीसरता, आदिवासी : दमन, शोषण और यथार्थ, पृ.सं.–166.

*****